महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र

(भा.कृ.अनु.प. - कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर)

चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर (उ०प्र०)-273165

अंक – 03 | समाचार – पत्रिका | मार्च, 2022

सम्पादक मंडल

मुख्य संपादक

डा0 विवेक प्रताप सिंह

(वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष)

संपादक

डा0 अजीत कुमार श्रीवास्तव

(वि.व. वि. – उद्यान)

डा0 राहुल कुमार सिंह

(वि.व. वि. – कृषि प्रसार)

डा0 संदीप प्रकाश उपाध्याय

(वि.व. वि. – मृदा विज्ञान)

श्री अवनीश कुमार सिंह

(वि.व. वि. – सस्य विज्ञान)

श्रीमती श्वेता सिंह

(वि.व. वि. – गृह विज्ञान)

संकलन एवं सहयोग

श्री गौरव कुमार सिंह

(कार्यक्रम सहायक - कम्प्यूटर)

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र,चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर (उ०प्र०) द्वारा प्रकाशित

Email– gorakhpurkvk2@gmail.com

Website – http://www.mgkvk.in/

Facebook- https://www.facebook.com/mgkvk

Twitter – https://www.twitter.com/mgkvk

Youtube – https://www.youtube.com/channel/UCdZ8rAP_lDHeU6Ic5sNNYEw

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र

एक नजर में

कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना कृषि एवं संबंधित विषयों की नवीनतम तकनीकों के स्थानांतरण एवं प्रसार द्वारा जनपद के सर्वांगीण विकास हेतु गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान के नियंत्रण में गोरक्षपीठाधीश्वर पूजनीय महंत श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा की गई। इस केन्द्र का शिलान्यास 23 अक्टूबर 2016 एवं उद्घाटन 2 मार्च 2019 को तत्कालीन केंद्रीय मंत्री कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार श्री राधा मोहन सिंह जी के द्वारा किया गया। यह केंद्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद – कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा वित्तपोषित है। यह केन्द्र गोरखनाथ की पवित्र धरती पर स्थापित होने की वजह से इस केंद्र का पूरा नाम महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र रखा गया। यह केन्द्र गोरखपुर जनपद से 35 किलोमीटर दूरी पर गोरखपुर – सोनौली मार्ग पर पीपीगंज रेलवे स्टेशन से 8 किलोमीटर दूरी पर (अक्षांश 26.929971, देशांतर 83.240244) पीपीगंज – बढ़या चौक मार्ग पर स्थित है। कृषि विज्ञान केन्द्र के पास 20.56 हेक्टेअर का प्रक्षेत्र है जिस पर प्रमुख रुप से गेहूँ, धान, सरसो, चना, तिल, गन्ना, अरहर इत्यादि फसलों का बीज उत्पादन किया जाता हैं।

संदेश

प्रो. उदय प्रताप सिंह
उपाध्यक्ष, प्रबन्ध समिति
गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान
गोरखनाथ, गोरखपुर

वर्तमान समय में कृषि उत्पादन लागत को कम करने एवं गुणवत्तायुक्त अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु यह आवश्यक है कि कृषकों तक नवीनतम कृषि अनुसंधान एवं कृषि तकनीकियों को पहुँचाया जाए। महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर इन नवीनतम तकनीकियों को निरंतर कृषकों तक पहुँचाने में तत्पर हैं जिससे कृषकों का आर्थिक एवं सामाजिक स्तर सुधारा जा सके।

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रकाशित मासिक न्यूज लैटर का यह अंक केन्द्र द्वारा किए गए एवं किए जाने वाले कार्यों के साथ-साथ नवीनतम कृषि तकनीकियों का प्रसार गांव-गांव एवं घर-घर पहुँचेगा, जो सभी वर्ग के किसानों के लिए लाभप्रद होगा।

(उदय प्रताप सिंह)

महाययोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, गोरखपुर द्वारा मार्च, 2022 में किये गये कार्य

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम

फसल/उद्यम का शीर्षक	संख्या	लाभार्थी
क) कृषक एवं महिला कृषकों हेतु प्रशिक्षण	5	115

2. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

फसल/उद्यम का शीर्षक	क्षेत्रफल हे०/ सं०	लाभार्थी संख्या
क) सरसो में सल्फर पोषक तत्व प्रबन्धन	02	14
ख) चने में जैव उर्वरक प्रबंधन का प्रदर्शन	2.5	10
ग) गेंदा की उन्नतशील प्रजाति पूसा नारंगी का का प्रदर्शन	0.25	10
घ) मधुमक्खी पालन का संवर्धन	01	40
ङ) प्याज की उन्नतशील प्रजाति एग्रीफाउंड लाइट रेड का प्रदर्शन	0.25	10
च) बरसीम की उच्च उत्पादक प्रजाति (BL-43) का प्रदर्शन	02	30
छ) गेहूं की उच्च उत्पादक प्रजाति (DBW 187) का प्रदर्शन	06	45
ज) सरसों की उच्च उत्पादक प्रजाति (variety- PM 31) का प्रदर्शन	10	25

3. प्रक्षेत्र परीक्षण

शीर्षक	लाभार्थी संख्या
क) सब्जी मटर की उन्नतशील प्रजाति काशी मुक्ति का परीक्षण	05
ख) चने की फसल में आई.पी.एम. द्वारा फली बेधक कीट का प्रबंधन पर परीक्षण	05

4. प्रसार गतिविधियां

शीर्षक गतिविधियां	संख्या	लाभार्थी
ख) वैज्ञानिकों का कृषक प्रक्षेत्र पर भ्रमण	21	63
ग) कृषकों का कृषि विज्ञान केन्द्र पर भ्रमण	111	111
घ) मोबाइल सलाह	55	सामूहिक
ङ) समाचार पत्र प्रकाशन	33	सामूहिक

प्रथम पंक्ति प्रदर्शन में दिये जाने वाले आदान

❖ केंद्र के प्रसार विशेषज्ञ डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा दिनांक 28-03-2022 को प्रथम पंक्ति प्रदर्शन योजनांतर्गत मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से गोरखपुर जनपद के चयनित 20 कृषकों में बी बॉक्स का वितरण किया गया। इस अवसर पर केंद्र के उद्यान विशेषज्ञ डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव उपस्थित रहे।

कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम

❖ दिनांक- 08/03/2022 को महायोगी गोरखाथ कृषि विज्ञान केन्द्र पर "अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस" का आयोजन किया गया। जिसमें 70 से अधिक महिला एवं पुरुषो ने प्रतिभाग किया।

❖ केंद्र के गृह विज्ञान विशेषज्ञ श्रीमती श्वेता सिंह द्वारा दिनांक-15/03/2022 को पचगाँवा गाँव में महिलाओं को देसी गाय के गोबर दिया व सजावट की सामग्री बनाने का प्रशिक्षण दिया गया एवं इसके महत्व के बारे में बताया गया।

❖ केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा दिनांक-16/03/2022 को नाबार्ड द्वारा गोरखपुर मंडल के फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी लि. के निदेशक मंडल के सदस्यों हेतु आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग कर व्याखान दिया गया। इस अवसर पर डी.डी.एम. नाबार्ड एवं संयुक्त निदेशक कृषि उपस्थित रहे ।

❖ केंद्र के गृह विज्ञान विशेषज्ञ श्रीमती श्वेता सिंह द्वारा दिनांक- 22/03/2022 को "स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के क्षमता विकास " विषय पर प्रशिक्षण दिया गया एवं विश्व जल दिवस के अवसर पर जल के संचय पर विशेष बल दिया गया।

❖ केंद्र के गृह विज्ञान विशेषज्ञ श्रीमती श्वेता सिंह द्वारा दिनांक- 26/03/2022 को चौकमाफी गांव में स्वच्छता अभियान के तहत महिलाओं को "स्वच्छता एवं स्वास्थ्य" विषय पर प्रशिक्षण दिया गया।

❖ केंद्र के उद्यान विशेषज्ञ डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा दिनांक- 28/03/2022 को किसानो को " आय दोगुनी करने हेतु ग्रीन हॉउस में वैज्ञानिक विधि से खीरा एवं शिमला मिर्च की खेती" विषय पर जानकारी महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञानं केंद्र, चौकमाफी में दी गयी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ राहुल कुमार सिंह एवं डॉ श्वेता सिंह ने भी आवशयक जानकारी दी।

❖ दिनांक- 30/03/2022 को केंद्र के मृदा विशेषज्ञ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय द्वारा ग्राम तालिखिया ब्लाक जंगल कौड़िया में ग्रीष्मकालीन दलहन फसलों में समेकित पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण दिया गया । जिसमे 28 कृषको ने प्रतिभाग किया।

प्रक्षेत्र भ्रमण

❖ दिनांक 08/03/2022 को केंद्र के उद्यान विशेषज्ञ डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा ग्राम भुएइधरपुर में किसानो की प्याज फसल का निरीक्षण कर उत्पादन सम्बन्धी आवश्यक सलाह दी गई।

❖ दिनांक 15/03/2022 को केंद्र के उद्यान विशेषज्ञ डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा ग्राम ठाकुरापार में प्याज फसल की अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन का निरीक्षण कर उत्पादन सम्बन्धी आवश्यक सलाह दी गई।

❖ केंद्र के प्रसार विशेषज्ञ डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा दिनांक 25-03-2022 को जंगल कौड़िया विकास खंड के मीरपुर गाँव में IARI-CATAT के Vivo पार्टनर्स योजनांतर्गत किसान अरुण कुमार एवं जीतेन्द्र के प्रक्षेत्र पर सरसों की प्रजाति पूसा विजय पर चल रहे प्रदर्शन का भ्रमण किया गया। इस अवसर पर केंद्र के यंग प्रोफेशनल यश प्रताप सिंह उपस्थित रहे।

❖ दिनांक 25/03/2022 को केंद्र के उद्यान विशेषज्ञ डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव एवं डॉ राहुल कुमार सिंह द्वारा ग्राम चौकमाफी ब्लाक भरोहिया में श्री राम सागर जी के प्रछेत्र में भ्रमण किया गया। बैगन के साथ गेंदा फूल की सहफसली खेती करने हेतु महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा प्रेरित किया गया था बैगन के साथ गेंदा फूल की सहफसली खेती द्वारा बैगन में तना एवं फल छेदक कीट का प्रकोप कम देखा गया एवं कृषक द्वारा भी इस खेती को सराहा गया तथा उसके द्वारा बताया गया की इस तरह से बैगन की खेती करने में कीटनाशी पर बहुत कम खर्च करना पड़ा।

❖ दिनांक 25/03/2022 को केंद्र के मृदा विशेषज्ञ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की स्वयं सहायता समूह की महिलाओ केंद्र के प्रछेत्र एवं स्थापित विभिन्न इकाईयों का भ्रमण कराया गया। जिसमे 40 महिला कृषको ने प्रतिभाग किया।

❖ दिनांक 30/03/2022 को केंद्र के उद्यान विशेषज्ञ डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव एवं डॉ राहुल कुमार सिंह द्वारा ग्राम राखुखोर ब्लाक भरोहिया में श्री जय राम जी के प्रछेत्र में भ्रमण किया गया । प्रछेत्र में निराई- गुड़ाई की आवश्यकता एवं नेप्थालिन एसिटिक एसिड 1 मिली प्रति 03 ली० पानी में मिलाकर छिड़काव करने की सलाह दिया।

❖ केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा दिनांक 30-03-2022 को भरोहिया विकास खंड के राखुखोर गाँव में जयराम यादव के मक्के के प्रक्षेत्र का भ्रमण कर तनाबेधक कीट की समस्या को चिन्हित कर उसके प्रबंधन हेतु आवश्यक सलाह दिया गया।

❖ केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा दिनांक 30-03-2022 को भरोहिया विकास खंड के राखुखोर गाँव में "आई.पी.एम. द्वारा चने की फसल में फली बेधक कीट के प्रबंधन" पर परीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत रामनेवास मौर्या के प्रक्षेत्र का भ्रमण किया गया एवं अच्छी पैदावार के लिए जरुरी सलाह दिया गया।

एफ.पी.ओ. बैठक

❖ केंद्र के प्रसार विशेषज्ञ डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा दिनांक 15-03-2022 को महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा निर्मित समस्त एफ.पी.ओ. के निदेशक मंडल के सदस्यों के साथ संयुक्त बैठक का आयोजन कराया गया। इस अवसर पर केंद्र के इंचार्ज- वरिष्ट वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. वी.पी. सिंह, शस्य विशेषज्ञ अवनीश सिंह एवं लेखाकार शुभम पाण्डेय उपस्थित रहे।

❖ केंद्र के प्रसार विशेषज्ञ डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा दिनांक 28-03-2022 को महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा निर्मित गौरैया फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड के निदेशक मंडल के सदस्यों के साथ बैठक का आयोजन कराया गया। इस अवसर पर केंद्र के सस्य विशेषज्ञ अवनीश सिंह सहित कुल दस किसानो ने प्रतिभाग किया।

कृषि विभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

❖ दिनांक 26/03/2022 को केंद्र के मृदा विशेषज्ञ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय ने कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ग्राम इंद्रपुर, ब्लाक कैम्पिएरगंज में आयोजित जैविक गोष्ठी/मेला में प्रतिभाग किया। जिसमे कृषको को जैविक खेती, जैविक उत्पादों की महत्ता सहित ई के वाई सी भी करने सम्बन्धित जानकारी दी गयी।

❖ दिनांक 28/03/2022 को केंद्र के मृदा विशेषज्ञ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय ने कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ग्राम जोगिया कोल, ब्लाक सहजनवा में आयोजित जैविक गोष्ठी/मेला में प्रतिभाग किया। जिसमे कृषको को जैविक खेती, जैविक उत्पादों की महत्ता सहित ई. के. वाई. सी. भी करने सम्बन्धित जानकारी दी गयी।

कैम्पियरगंज के विभिन्न गावों में कृषको को सब्जी के बीज एवं उनके पशुओ हेतु खनिज लवण, अन्तः एवं वाह्य परजीवीयों के नियंत्रण हेतु निःशुल्क दवाओं एवं भिन्डी के बीज का वितरण

अप्रैल माह के मुख्य खेती-बाड़ी के कार्य

फसलोत्पादन एवं प्रबंधन

मूँग/ उर्द

- ग्रीष्मकालीन उर्द की बुवाई का समय बीत चूका है। मूँग की बुवाई 10 अप्रैल तक की जा सकती है।
- बीज की मात्रा 10-12 किग्रा/एकड़ रखें।
- बुवाई के समय फफूंदनाशक दवा से 2 ग्राम/कि.ग्रा. की दर से बीजों को शोधित करें। इसके अलावा राइजोबियम और पी.एस.बी. कल्चर से (250 ग्राम) बीज शोधन अवश्य करें। 10-12 किलोग्राम बीज के लिए यह पर्याप्त है।
- पहली सिंचाई 20-25 दिनों में करें। इसके बाद 10-12 दिनों के अंतराल में सिंचाई करें। इस प्रकार कुल 2 से 3 सिंचाई करें। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि, फूल आने की अवस्था तथा फलियां बनने पर सिंचाई अवश्य करनी चाहिए।

गेहूं

- गेहूं काटने से पहले खरपतवार या गेहूं की अन्य प्रजातियों की बालियों को निकल देना चाहिए, जिससे मडई के समय के समय इनके बीज गेहूँ के बीज में न मिलने पायें।

जौ/चना/मटर/ मसूर/ सरसों :-

- इन फसलों की कटाई एवं मडाई का कार्य पूरा कर ले।

मृदा विज्ञान

- गन्ना, आलू व राई के खेत में मूंग की बुवाई 10 अप्रैल तक की जा सकती है। इनमे पोषक तत्वों की मात्रा 20:60:40::N:P:K किग्रा/हे. के अनुपात में उपयोग किया जाना चाहिए।
- कद्दुवर्गीय सब्जियों का भी यह उपयुक्त समय है। इनमे पोषक तत्वों की मात्रा 60:40:40::N:P: K किग्रा/हे. के अनुपात में उपयोग किया जाना चाहिए।
- हल्दी की बुवाई के लिए अपने खेत को तैयार कर लें एवं बीज की व्यवस्था कर ले। हल्दी की बुवाई हेतु प्रति हेक्टेयर लिए 15 से 20 कुंतल बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई से पूर्व प्रकंदों को एगलाल या एग्रोसान के घोल से उपचारित कर लेना चाहिए। पंक्तियों से पंक्ति की दूरी 45-50 सेंटीमीटर तथा बीज से बीज की दूरी 20-25 सेंटीमीटर रखी जानी चाहिए। खाद एवं उर्वरक की मात्रा मृदा जांच के आधार पर करनी चाहिए परंतु मृदा जांच ना होने की अवस्था में संस्तुत मात्रा देनी चाहिए। हल्दी की फसल भूमि से अधिक मात्रा में पोषक तत्व ग्रहण करती है अतः गोबर की सड़ी खाद या कंपोस्ट 20 टन प्रति हेक्टेयर की मात्रा खेत में समान रूप से डालकर जुताई करें। इसके अतिरिक्त 200 किलोग्राम अमोनियम सल्फेट एवं 200 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति हेक्टेयर अथवा 100 किलोग्राम यूरिया, 125 किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट, 200 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश तथा 40 किलोग्राम बेंटोनाइट सल्फर प्रति हेक्टेयर की मात्रा बुवाई के पूर्व प्रयोग की जानी चाहिए। इसके 40 दिन बाद 85 किलोग्राम यूरिया, 20 किलोग्राम बेंटोनाइट सल्फर प्रति हेक्टेयर एवं उसके पश्चात 60 से 80 दिन बाद 85 किलोग्राम यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से खड़ी फसल में डालना चाहिए।
- सूरन की खेती के लिए अपने खेत को तैयार कर लें एवं बीज की व्यवस्था कर ले। सूरन की बुवाई हेतु प्रति हेक्टेयर 75 कुंतल बीज की आवश्यकता होती है। खाद एवं उर्वरक की मात्रा मृदा जांच के आधार पर करनी चाहिए परंतु मृदा जांच ना होने की अवस्था में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश तत्वों की 80 kg:60 kg :100 kg प्रति हेक्टेयर की दर से उर्वरक के रूप

में तथा 20 से 25 टन सड़ी गोबर की खाद देनी चाहिए। खाद एवं उर्वरक को खेत में ना छिटककर गड्ढों में ही डालना उत्तम रहता है प्रति गड्ढे के हिसाब से कंपोस्ट या गोबर की खाद 2 किलोग्राम, यूरिया 10 ग्राम, सिंगल सुपर फास्फेट 29 ग्राम, म्यूरेट ऑफ पोटाश 16 ग्राम तथा ब्लीचिंग पाउडर एक चम्मच, मिट्टी में मिलाकर गड्ढे को भर देना चाहिए।

मौनपालन

- ❖ लीची एवं मक्के के प्रक्षेत्र का चयन कर, मौनवंशों माइग्रेशन करें।
- ❖ मौनगृह के तलपट पर सम्बंधित उपकरणों को पोटैशियम परमैगनेट/ लाल दवा से एक बार धुलाई करें।
- ❖ माइट के प्रकोप से बचने के लिए मौनगृह के तलपट की समय-समय पर सफाई करते रहें।
- ❖ अत्यधिक पुराने एवं काले पड़ चुके छत्तों को नष्ट कर दें तथा उनकी प्रतिपूर्ति मोमी छात्ताधर लगाकर नए छत्तों का निर्माण कराकर कर लिया जाए ताकि मौनवंशों की गुणवत्ता प्रभावित न हो।
- ❖ गतवर्ष की अधिक शहद उत्पादन करने वाले सशक्त मौनवंशों को मात्र मौनवंश की श्रेणी में रखते हुए इनसे मौनवंशों का संवर्धन सुनिश्चित किया जाए ।
- ❖ मौनवंश का लगातार निरीक्षण कर समय से विभाजन सुनिश्चित करें।

पशुपालन

- ❖ पशुओ के मुँह में छाले पड़ने पर सुहागा के चूर्ण को पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए या फिर पोटाश को ठंडे पानी में मिलाकर मुँह की सफाई करनी चाहिए | ग्लिसरीन और बोरिक ऐसिड का पेस्ट बनाकर जीभ के उपर छालों पर लगानी चाहिए | मुँह को खोल कर मुँह के अंदर तथा जीभ पर मक्खन लगाने से आराम महसूस होता है | उपर लिखे सारे उपचार को दिन में तीन से चार बार परिस्थिति के अनुरूप दोहराते रहना चाहिए |
- ❖ थन कटना: थन कटने पर सबसे पहले उसे साफ़ पानी से धोकर उसके उपर एंटीसेप्टिक क्रीम का उपयोग करना चाहिए | अगर क्रीम नहीं हो तो पोटाश के पानी से धोकर फिटकिरी पीस कर लगाना चाहिए | दूध दोहने के पहले थन को पानी से धोना चाहिए और दोहने के उपरान्त नारियल तेल या सरसों तेल लगाना चाहिए |
- ❖ जायद के हरे चारे की बुआई करें, बरसीम चारा बीज उत्पादन हेतु कटाई कार्य करें।
- ❖ दुधारू पशुओ के लिये उनके आहार प्रबंधन पर विशेष ध्यान दें
- ❖ बरसीम का बीज तैयार करें।
- ❖ अन्तः एवं बाह्य परजीवी का बचाव करने के लिए पशुओं को पानी में दवा मिलाकर नहलाएं और दवा पिलाएं।

सब्जियों की खेती

- ❖ ग्रीष्म कालीन सब्जियों जैसे लोबिया, भिन्डी, लौकी, खीरा, खरबूजा, तरबूज, नेनुआ, आदि की बुवाई यदि न की हो तो पूरी कर ले |
- ❖ ग्रीष्म कालीन सब्जियों, जिनकी बोआई फ़रवरी माह में कर ली गई थी, उन फसलो की हर सातवे दिन के अंतर पर सिचाई करते रहे तथा आवशयकतानुसार निराई-गुड़ाई करें।
- ❖ लहसुन की फसल में खुदाई के 10-12 दिन पूर्व सिचाई बंद कर दे।
- ❖ प्रति हेक्टेअर अदरक की 18-20 कुंतल, हल्दी की 15 -20 कुंतल व् सुरन की 75 कुंतल बीज की आवशयकता होती है।

फलों की खेती

- ❖ आम फलों को गिरने से रोकने के लिए नेप्थालिन एसिटिक एसिड (20 पी.पी. एम.) 2 ग्राम प्रति 100 ली. पानी में मिलाकर छिडकाव करना चाहिए।

- गुम्मा व्याधि ग्रसित बौर को हटा देना चाहिए।
- यदि बाग ईट के भट्टे के पास हो तो निदान हेतु बोरेक्स (1%) का छिडकाव अंतिम सप्ताह में करे।
- आम में भुंनगा कीट से बचाव हेतु मोनोक्रोटोफास (1.0 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) घोलकर छिड़काव करे।
- लीची के बागो की आवश्यकतानुसार सिचाई करते रहे |
- लीची में फ्रूट बोरर की रोकथाम हेतु डाईक्लोरोवास आधा मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे।

फूलो की खेती

- गर्मी वाले मौसमी फूलो जैसे पोर्चुलाका, जीनिया, सुन्फ्लोवर, कोचिया, नारंगी, गोमफ्रिना आदि के पौधों की आवशयकातानुसार सिचाई करें।

संपर्क सूत्र			
नाम	**पद**	**विषय**	**मो.नं.**
डा0 विवेक प्रताप सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	पशुपालन	**07651922058**
डा0 अजीत कुमार श्रीवास्तव	विषय वस्तु विशेषज्ञ	उद्यान	**08787264166**
डा0 राहुल कुमार सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	कृषि प्रसार	**07007275688**
डा0 संदीप प्रकाश उपाध्याय	विषय वस्तु विशेषज्ञ	मृदा विज्ञान	**09621437547**
श्री अवनीश कुमार सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	सस्य विज्ञान	**09792099943**
श्रीमती श्वेता सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	गृह विज्ञान	**09453158193**

।। कृषिमूलम् जगत् सर्वम् ।।
बौक माफी (पीपीगंज), नंगल कौडिया, गोरखपुर, उ. प्र.